International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.1 Sept – Oct 2021

"साठोत्तरी हिंदी कविता में 'जनवादी चेतना'"

(जनकवि नागार्जुन के संदर्भ में)

Khilare Sindhu Daji
Assistant Professor, Dept. Of Hindi
Uma Mahavidyalaya Pandharpur, Dist- Solapur, 413304(MS)
Email- khilaresindhu28@gmail.com

सारांश :

सारांश रुप मे कहा जा सकता हैं कि जनवादी कवियों में नागार्जुन शीर्ष कवि हैं उनकी कविता का सबसे बड़ा हथियार व्यंग्य है जिसके सहारे वे अपनी अपार संवेदनाएं व्यापक जनता के लिए व्यक्त करते हैं नागार्जुन के व्यंग्य मे क्रूरता और करुणा दोनों है भ्रष्ट राजनेताओं की चालबाजियों, छल-छद्मों जनता के शोषण की प्रक्रिया में उनका व्यंग्य बड़ा क्रूर हो जाता हैं। स्वाधीनता के बाद की जनवादी कविताओं केन्द्र में भारतीय राजनीति और उसकी स्वार्थपरता है। अवसर वादिता और दोगलापन हैं समकालीन राजनीति ने भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन को अपनी जकड़बंदी में ले लिया था नागार्जुन की जनवादी कविता में इसी चरित्र का खुलासा किया है। मजदूर, कृषक, दलित एवं निम्न मध्यम वर्ग पर शोषण का जो चक्र चल रहा था उसे अपनी कविता के माध्यम से बेनकाब कर आम आदमी के दुःख दर्द को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

बीजशब्द : जनवाद, कविता, प्रगतिवाद, मार्क्सवाद, मार्क्सवादी विचारधारा, सामाजिक विचारधारा, सोशलिज्म, पूंजीवाद, शोषकवर्ग, शोषितवर्ग।

प्रस्तावनाः

'जनवाद' शब्द अंग्रजी के डेमोक्रसी शब्द का प्रतिरूप है। हिंदी में डेमोक्रेसी शब्द के लिए जनवाद के अतिरिक्त प्रजातंत्र, लोकतंत्र, जनतंत्र, जम्हूरियत, लोकशाही आदि शब्दों का प्रयोग होता है। शाब्दिक अर्थ - डेमोक्रेसी शब्द ग्रीक भाषा के देमोस और क्रेटीन नामक दो शब्दों को मिलाकर बना है। देमोस का शाब्दिक अर्थ है- 'जनता' और क्रेटीन धातु का शाब्दिक अर्थ है- 'शासन करना'। अतः डेमोक्रेसी का शाब्दिक अर्थ हुआ- 'जनता का शासन'।

साठोत्तरी हिंदी कविता में 'जनवादी चेतना':

स्वतंत्रता, राजनीति और बेहतर समाज के आदर्शवादी स्वप्न से जब मोह भंग हुआ, भारतीय मेहनतकश अपनी मीठी नींद से जागा तो उसकी आँखों में अंगारे थे - नक्सलवादी विद्रोह, तेलंगना का किसान विद्रोह, कृषक क्रांति, अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए लड़ाई। भूखे - नंगे समाज, जिसे राजनेताओं ने भविष्य के सुनहरे सपनों में पगी अफिम की गोली पिलाकर नशे में मूकदर्शक बनाकर बैठा दिया था। वह जब मोहभंग की स्थिति में पहुँचा तो न सिर्फ उसकी आँखों में धोखा दिए जाने के कारण प्रतिशोध की लाली थी बल्कि उसकी चेतना और शरीर ने भी आंदोलन की मुद्रा धारण कर ली। नागार्जुन ऐसे कवि है जिसने स्वाधीनता आन्दोलन मे सक्रिय भागीदारी की ओर स्वाधीन भारत के कई दशकों का स्वाद भी चखाए वे स्वाधीनता आन्दोलन से परिचित ही नही, उन मूल्यों के निर्माताओ मे से एक थे जो हमे

विरासत मे प्राप्त हुए थे किन्तु उन मूल्यों की विरासत को समूल नष्ट होते हुए भी उन्होंने देखा। रोकने मे जुटे भी, किन्तु सुनियोजित कुचक्रो मे वे असहाय प्रमाणित हुए यही कारण है कि नागार्जुन का व्यंग्य इतना तेज हो गया है कि आक्रोष का धारदार तेवर देखकर ही उनके हृदय की पीड़ा का अनुमान लगा सकते है।

नागार्जुन

कोट मगर,

गलियाँ छलकति, बैलों की जोड़ी को देते वोट मगर,

हम गाँजा ही बेचा ही करते लेते खादी की **की कविता में जनवादी चेतना:**

नागार्जुन स्वाधीनता पश्चात् भारत के जनवादी हिंदी काव्य के प्रतिनिधि जनकवि के रूप में सुविख्यात है। वास्तव में यह बात ध्यान देने की है कि बाबा को अपने जनकवि होने की जिम्मेदारी का भी एहसास है। इसीलिए नागार्जुन कहते हैं -

"जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बताऊँ,

जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ,

.....जनकवि हूँ मैं क्यों चाटूँ थूक तुम्हारी,

श्रमिकों पर क्यों चलने दूँ बंदुक तुम्हारी।"1

प्रतिहिंसा नागार्जुन के काव्य की शक्ति है। नागार्जुन की इस प्रतिहिंसा ने किसी को भी नहीं छोड़ा है, चाहे वह महात्मा गांधी हो, चाहे नेहरू, पुलिस के अफसरों की तो गिनती ही क्या! 'तुम रह जाते दस साल और' नामक कविता में नागार्जुन ने नेहरू के शासन की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा है-

" हम चावल लाते एक किलो , दस का दे आते नोट मगर,

यों सिकुड़े रहते, सपने में सिलवाते ऊनी ओट मगर।"2

नागार्जुन जानते हैं कि वास्तव में इस दुनिया में दो दुनिया हैं, एक गरीबों की और एक अमिरों की, एक शोषितों की और एक शोषकों की। सामाजिक- आर्थिक विषमता को नागार्जुन ने जबरदस्त और सीधे ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। नागार्जुन की जनवादी चेतना के कारण उनका दुखः- दर्द नागार्जुन की कविताओं में पूरी ताकद के साथ व्यक्त हुआ है -

"भूसी मिला - मिलकर चीनी,

बेच रहा बनिया का बेटा,

कंकालों पर बिछा दी गई,

खद्दर की सतरंगी चादर,

बंदूके हंस पड़ी कि देखा,

चंदन के चरने का आदर।"3

नागार्जुन ने हिंदी कविता को इस योग्य बनाया कि वह मायकोवस्की की यह इच्छा पूरी कर सके। उन्होंने बार-बार स्वयं को जनकवि कहा है -

"हृद्यधर्मी जनकवि में,

जनकवि हो तो तुम्ही बताओ,

मैं जनकवि हूँ।"4

सन 1971 में लिखी कविता में 'रहे गुँजते बड़े देर तक' में वे छोटे - छोटे बच्चों से तुतलहाट वाले स्वर में मेले नाम, तेले नाम' सुनते हैं और सोचते हैं कि निर्भय होकर शोषण की बुनियादें वह खोदेंगे। संघर्षरत जनता कहती है -

"जली ठूंठ पर बैठकर गई कोकिला कूक,
बाल न बांका कर सकी शासन की बंदूक।"5

जनवादी चरित्र के अनुरूप नागार्जुन की रचनाशीलता काफी गहरी है। हिंदी की प्रगतिशील कवियों मे एकमात्र ऐसे नागार्जुन कवि हैं। नागार्जुन की कविता का मुख्यांश साधारण जन की जिंदगी और उस जिंदगी के बीच से प्राप्त की गई गहन अनुभूतियों, विचारों और कल्पनाओं से निर्मित हैं, वह जिंदगी जो जनता जी रही है और जिसे एक बेहतर मानवीय शक्ल देने के लिए निरंतर संघर्षरत है।

निष्कर्ष:

नागार्जुन जिस जमीन पर खड़े होकर लाखों सामान्यजन को चित्रित करते हैं वह देश के जनसाधारण की अपनी जमीन अपनी मानसिकता है। नागार्जुन की जनवादी चेतना उनके पूरे रचनाकार के साथ देश के लाखों साधारण जन के साथ आत्मसात हो गई। नागार्जुन की जनवादी चेतना ने अपने को पूरी तरह डि-क्लास करके नागार्जुन की चेतना को देश के जनसाधारण की चेतना के साथ पूरी तरह एकात्म करके उन्हें जनसाधारण के प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

संदर्भ:

1.नागार्जुन: प्यासी पथराई आँखें, वाणी प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 45

2.नागार्जुन: बुकलेट, वाणी प्रकाशन कानपुर पृष्ठ 69

3.नागार्जुन: तालाब की मछलियाँ, वाणी प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 84

4.नागार्जुन: रत्नगर्भा, वाणी प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 1

5.नागार्जुन: पुरानी जुतियों का कोरम, वाणी प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 32